जुलाई २०१७

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

एडजस्टमेन्ट से "कॉमनसेन्स" खिलती है

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकः
डिम्पल मेहता
वर्ष : ५ अंकः ४
अखंड क्रमांकः ५२
जुलाई २०१७

....

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यू.एस.ए. : ६० डोलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

संपादकीय

बालमित्रों,

जब हम किसी की अच्छी कॉमनसेन्स देखते हैं, तब हम खुश हो जाते हैं। इसका मतलब यह है कि हमारे अंदर भी "कॉमनसेन्स" डेवेलप हो, वह हमें पसंद है।

यदि आप अच्छी "कॉमनसेन्स" वाले को ध्यान से देखोगे तो आपको उसमें कुछ सामान्य गुण ज़रूर दिखेंगे। उनमें से एक गुण है "एडजस्टमेन्ट"।

इस अंक में हमें यह जानने मिलेगा कि "एडजस्टमेन्ट" और "कॉमनसेन्स" का किस तरह से कनेक्शन है। और एडजस्टमेन्ट लेने से "कॉमनसेन्स" कैसे बढ़ती है।

तो हो जाइए तैयार... एडजस्टमेन्ट सीखने और उससे "कॉमनसेन्स" का फायदा उठाने।

-डिम्पल मेहता

एडजस्टमेन्ट से "कॉमनसेन्स" खिलती है

दादा जी कहते हैं...

"मिलनसार" से "कॉमनसेन्स" बढ़ती है

दादाश्री : क्या कभी ऐसा इंसान देखा है जिसमें "कॉमनसेन्स" हो? आज तक मैंने ऐसा कोई इंसान देखा ही नहीं जिसमें कॉमनसेन्स हो। बड़े-बड़े "कलेक्टर" लेकिन कॉमनसेन्स लाएँ कहाँ से? "कॉमनसेन्स" वाले के घर में क्या कहीं क्लेश होता होगा? जिनके साथ रहना है, जिनके साथ खाना है, जिनके साथ पीना है, जिनके साथ टेबल पर खाने के लिए बैठना है, क्या उनके साथ क्लेश करना चाहिए? उसे कॉमनसेन्स कहते हैं। ऐसी "कॉमनसेन्स" कहाँ से लाए? पूरा जगत् तो यों ही मन में गुमान लेकर घूमता रहता है। "मैं कुछ जानता हूँ", अरे! तू क्या जानता है? अभी तक "कॉमनसेन्स" को तो जाना नहीं है, तो और क्या खाक जाना है?

प्रश्नकर्ता : दो व्यक्ति के बीच में मतभेद हो जाए, तो दोनों में "कॉमनसेन्स" किसकी कम है, यह कैसे पता चलेगा?

दादाश्री : वह तो पता चल ही जाएगा! दोनों में से पहले किसने मतभेद डाला? उसमें कम है। "कॉमनसेन्स" वाला इंसान "एवरीव्हेर एडजस्टेबल" होता है। कोई गाली दे, उसके साथ भी "एडजस्ट" होकर कहेगा, "आओ आओ, बैठो न! कोई हर्ज़ नहीं।"

इसलिए "कॉमनसेन्स" चाहिए। यह तो, "बेअक्ल हो" ऐसा कहा तो मुँह बिगड़ जाता है। अरे, "कॉमनसेन्स" नहीं है? ज़रा सा कहा उसमें आपका इतना मुँह क्यों बिगड़ गया? यदि एडजस्टमेन्ट ले लो न, तो तुरंत "कॉमनसेन्स" बढ़ जाती है।

दादाश्री : इसीलिए मैं कहता हूँ न कि सभी के साथ बैठने से लोगों का आप पर प्रेम उत्पन्न होगा। और अन्य बातचीत होती हैं, अपनी-अपनी बातें करते हैं, इन बातों में से कुछ पकड़ लिया तो अपनी "कॉमनसेन्स" बढ़ेगी। सभी लोगों के साथ मिलकर रहने से "कॉमनसेन्स" बढती है।

प्रश्नकर्ता : सभी से मिलजुलकर रहना, ऐसा आपने कहा न! तो तिरस्कार छोड़कर, सभी से मिलजुलकर रहने से, क्या "कॉमनसेन्स" बढ़ेगी?

दादाश्री : तिरस्कार तो गाय-भेंसों का भी नहीं करना है, तो मनुष्यों का कैसे कर सकते हैं?

जादूई जिन

टीचर ने सूचित किया, "ऐन्युअल डे के लिए शील, गार्गी और तन्वी, "ब्यूटी एन्ड द बीस्ट" पर ड्रामा करेंगे। गर्ल्स, पूरे ड्रामे की ज़िम्मेदारी आपकी है। स्क्रिप्ट, रोल्स और अन्य सबकुछ आपको खुद ही तय करना पड़ेगा।"

शील, गार्गी और तन्वी के उत्साह का पार न रहा। जैसे ही स्कूल बेल बजी, ड्रामे की बातों में तीनों लग गए।

गार्गी बोली, "मैं "ब्यूटी" का रोल करूँगी।"

शील ने कहा, "ओह, मिस घमंडी! अपने आप ही तय कर लिया? मुझे ब्यूटी बनना है।"

"तू मुझे घमंडी कैसे कह सकती है? हम सब को पता है कि तू कितनी घमंडी है।" गार्गी और शील के बीच कहासुनी शुरू हो गई।

तन्वी ने दोनों की बोलचाल बंद करवाने की कोशिश की, "ओह प्लीज़, स्टॉप। मुझे भूख लगी है। हम रोल्स कल तय करें?"

दूसरे दिन रोल्स तय करने की बात करके तीनों चले गए।

शील उदास होकर घर की ओर जा रही थी तभी उसके पैर से कुछ टकराया। नीचे देखा तो एक पुराना काँच का लैम्प था।

शील को लगा, "अरे, यह तो स्टॉरी बुक में होता है ऐसा लैम्प दिख रहा है। उसे घिसने से जिन बाहर आकर तीन विश पूरी करता है।" उसने नीचे झुककर लैम्प हाथ में ले लिया। ऊपर जमी हुई धूल साफ कर ही रही थी, तभी फू...क, एक जिन शील के सामने प्रकट हुआ।

शील अचंभे में आ गई। उसने अपनी आँखें मसलीं। गौर से देखा तो एक जिन मुँह लटकाकर उसके सामने खड़ा था। जैसा स्टॉरी बुक में होता है वैसा वह नॉर्मल जिन नहीं था। वह तो दुबला और वृद्ध था, मानो सालों से सोया नहीं हो, ऐसा दिख रहा था।

लेकिन शील तो बहुत खुश हो गई, "वाह! मतलब कि मेरी तीन विश पूरी होगी?"

जिन अकुलाकर बोला, "ओह, मुझे थोड़ा आराम करने दो। मुझे याद भी नहीं है कि मैं कब से इस लैम्प में कैद हूँ। सालों से खाना नहीं खाया है, समुद्र में घूम-घूमकर थक गया हूँ और तुम्हें तीन विश की पड़ी है?"

शील ने गौर से जिन की ओर देखा और सोचा, "मेरा नसीब, कि एक जिन मिला जो जिन की तरह दिखता भी नहीं है और चिड़चिड़ा भी है।"

धीरे से शील ने पूछा, "ठीक है, तीन नहीं, लेकिन एक विश माँगू?"

जिन ने गहरी साँस ली, "तुमने लैम्प घिसा है, इसलिए तुम मेरी मालकिन हो। लेकिन एक ही हं..."

शील के चेहरे पर एक मीठी मुस्कान आ गई।

उसने कहा, "मेरी इच्छा है कि मेरे दोस्त मेरे साथ कभी फाइट न करें। जब वे मेरे साथ फाइट करते हैं, तब मैं बहुत उदास हो जाती हूँ।"

"मेरे मास्टर की दी हुई दो सुनहरी चाबियाँ यदि कोई अपना लेगा, तो उसकी सारी उदासी गायब हो जाएगी।"

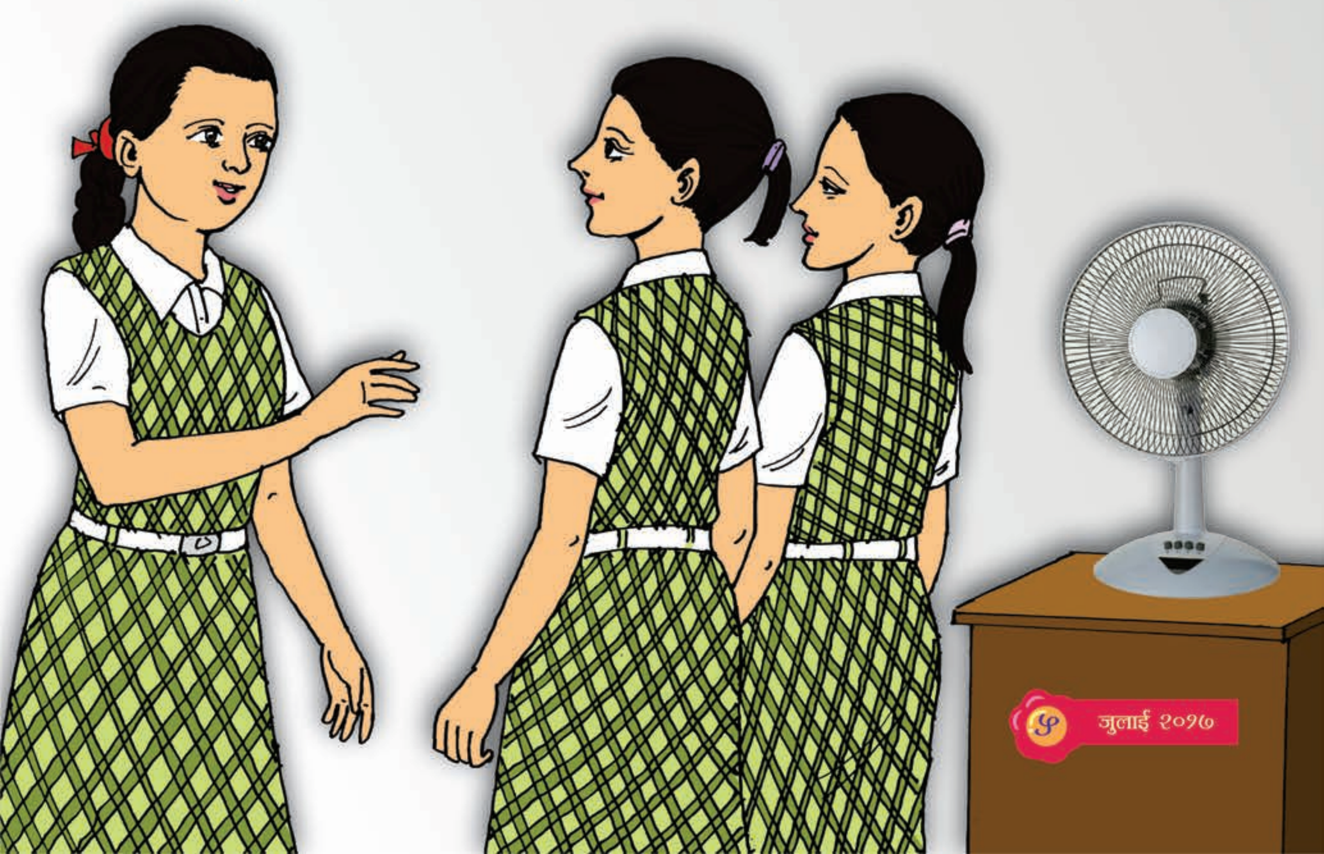

जिन ने सिर हिलाकर कहा, “लो, एक विश तो बेकार हो गई।”

“मतलब?” शील को कुछ समझ में नहीं आया।

“देखो, तुम मेरी मालकिन हो। इसलिए मैं तुम्हारे अंदर बदलाव ला सकता हूँ। लेकिन तुम्हारी इच्छा के अनुसार किसी और में बदलाव नहीं ला सकता। लेकिन मेरे मास्टर की दी हुई दो सुनहरी चाबियाँ यदि कोई अपना लेगा, तो उसकी सारी उदासी गायब हो जाएगी।”

शील को जिन की बात में दिलचस्पी हुई।

“एडजस्ट एवरीव्हेर” और “टकराव टालिए”। जो व्यक्ति सभी संयोगों में एडजस्टमेन्ट लेने का प्रयत्न करता है, और किसी के साथ टकराव में नहीं आता, उसे कभी उदासी छू भी नहीं सकती।” यह वाक्य बोलते ही, थके हुए जिन केचेहरे पर एक अलग ही चमक आ गई और कुछ ही पल में वह वापस लैम्प में अदृश्य हो गया।

दूसरे दिन, शील ने अपने दोस्तों के साथ सब तरह से एडजस्ट होने का निश्चय किया।

कौन किसका रोल करेगा, उस समस्या के समाधान के लिए शील ने कहा, “गर्ल्स, मुझे पता है कि हम सभी को “ब्यूटी” का रोल चाहिए। लेकिन यह तो पॉसिबल नहीं है। तो एक काम करें? सभी रोल्स के नाम एक-एक चिट्ठी पर लिखते हैं। जिसके हिस्से में जो चिट्ठी आएगी वह रोल उसे मिलेगा।”

गार्गी और तन्वी सहमत हो गए।

शील को “बीस्ट” का रोल नहीं चाहिए था, और वही उसे मिला। लेकिन फिर भी वह खुश थी। फ्रेन्ड्स के साथ कोई झगड़ा किए बिना प्रॉब्लेम सॉल्व हो गया, उसकी उसे खुशी थी। तीनों ने बैठकर स्क्रिप्ट बनाई और दूसरे दिन रिहर्सल करने का तय किया और चले गए।

शील पूरे रास्ते जिन को याद कर रही थी। घर जाकर उसने जिन को बढ़िया सा खाना दिया।

जिन ने एक बड़ी सी डकार ली और पूछा, “तो तुमने अपनी दूसरी विश के बारे में क्या सोचा?”

शील तो अपने जवाब के साथ तैयार ही थी, “हाँ, मैं कभी किसी भी समस्या में न फसूँ।”

जिन ने अपनी दाढ़ी सहलाई और बोला, “हं, अच्छा सोचा है! तो इसके लिए तुम क्या करोगी?”

शील धप्प से जिन के पास बैठ गई, “एक मिनट, जिन तो आप हो न? तो आप विश पूरी नहीं करोगे?”

जिन बोला, “ओह! जादू के इंतज़ार में बैठे रहना चाहिए? पढ़ाई बंद कर देंगे तो जो सीखा है, वह भी भूल जाएँगे। इसी तरह यदि जादू की प्रेक्टिस नहीं करूँगा, तो जादू करना भूल जाऊँगा। बहुत समय से मैंने प्रेक्टिस नहीं की है।”

शील का मुँह लटक गया।

जिन ने आगे कहा, “लेकिन यदि कॉमनसेन्स का उपयोग किया, तो किसी भी समस्या में कभी नहीं फसेंगे।”

“कॉमनसेन्स?” शील ने पूछा।

“हाँ, कॉमनसेन्स से अच्छी खासी समस्याओं के ताले खुल जाते हैं। कोई भी प्रॉब्लेम कॉमनसेन्स से सॉल्व हो सकती है। पता है, यह कॉमनसेन्स कैसे प्रकट होती है? एडजस्टमेन्ट लेने से और टकराव टालने से। यदि कोई हमसे टकराए, लेकिन हम किसी से नहीं टकराएँ, तो कॉमनसेन्स उत्पन्न होती है। किसी भी संयोग में एडजस्टमेन्ट लेना सीख जाएँ तो कॉमनसेन्स खिलती है।”

और फु...क करके जिन वापस लैम्प में अदृश्य हो गया।

जब दूसरे दिन शील प्रेक्टिस के लिए पहुँची तब रूम में बहुत गर्मी थी। गार्गी ने रूम की सभी स्विच चालू-बंद करके देखी, लेकिन पंखा चालू नहीं हुआ।

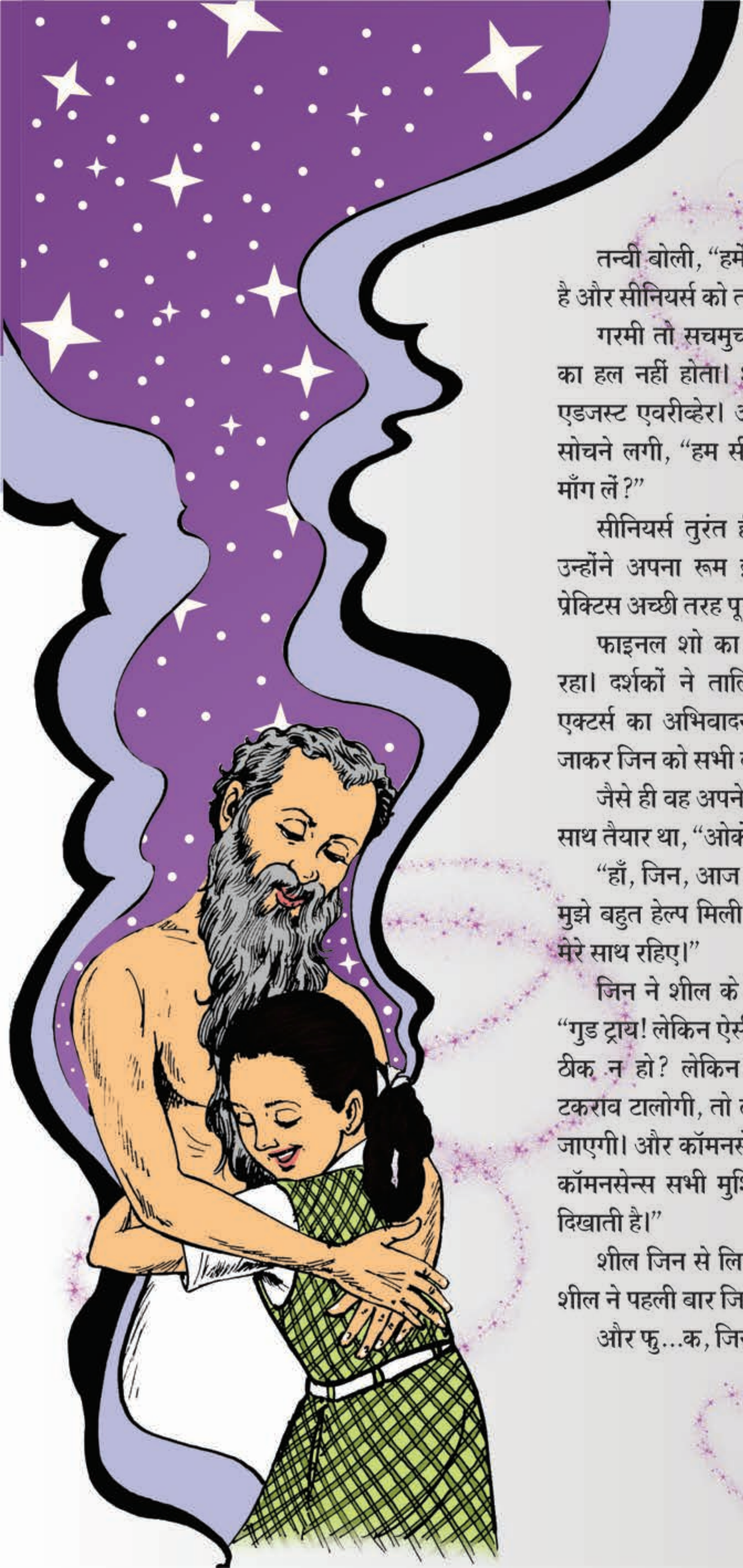

तन्वी बोली, "हमें प्रेक्टिस करने के लिए कैसी भट्टी दी है और सीनियर्स को तो ए.सी. वाला रूम मिला है।"

गरमी तो सचमुच बहुत थी। लेकिन फरियाद समस्या का हल नहीं होता। शील को जिन की बात याद आई। एडजस्ट एवरीव्हेर। और वह एडजस्टमेन्ट लेने के उपाय सोचने लगी, "हम सीनियर्स से उनके रूम का टेबलफेन माँग लें?"

सीनियर्स तुरंत ही मान गए और थोड़ी देर के बाद उन्होंने अपना रूम इस्तेमाल करने के लिए भी दिया। प्रेक्टिस अच्छी तरह पूरी हो गई।

फाइनल शो का दिन आ गया। नाटक बहुत अच्छा रहा। दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ सभी एक्टर्स का अभिवादन किया। शील बहुत खुश थी। घर जाकर जिन को सभी बातें बताने की जल्दी थी।

जैसे ही वह अपने रूम में पहुँची, जिन अपने सवाल के साथ तैयार था, "ओके, तो तीसरी विश है?"

"हाँ, जिन, आज मैं बहुत खुश हूँ। आपकी चाबियों से मुझे बहुत हेल्प मिली है। मेरी इच्छा है कि आप हमेशा ही मेरे साथ रहिए।"

जिन ने शील के सिर पर एक हल्की सी चपत मारी, "गुड ट्राय! लेकिन ऐसी इच्छा रखने का क्या मतलब कि जो ठीक न हो? लेकिन यदि तुम एडजस्टमेन्ट लोगी और टकराव टालोगी, तो तुम्हारी कॉमनसेन्स दिनोंदिन खिलती जाएगी। और कॉमनसेन्स कोई जादूई जिन से कम नहीं है। कॉमनसेन्स सभी मुश्किलों से बाहर निकलने का रास्ता दिखाती है।"

शील जिन से लिपट गई। जिन की आँखें नम हो गई। शील ने पहली बार जिन की हल्की मुस्कराहट देखी।

और फु...क, जिन वापस लैम्प में अदृश्य हो गया।

अपनी तरफ से हमें टकराव करना नहीं चाहिए। जब सामने वाला टकराए तब हम तय करें कि हमें टकराना ही नहीं है, तो इससे "कॉमनसेन्स" उत्पन्न होती है। आत्मा की शक्ति ऐसी है कि घर्षण के समय कैसा व्यवहार करें उसका उपाय बता देती है। और एक बार बता दे तो फिर वह ज्ञान जाता नहीं है। ऐसा करते-करते "कॉमनसेन्स" बढ़ती है।

यह तो नई ही बात है

"कॉमनसेन्स" एक ऐसी चाबी है जो "एवरीव्हेर एप्लिकेबल" है। उससे चाहे कितना भी जंग लगा हुआ ताला होगा, वह खुल जाएगा। बुरे से बुरे व्यक्ति का ताला भी हमारे द्वारा खुल जाए तो समझना कि हमारे पास "कॉमनसेन्स" है। वर्ना सभी "कॉमनसेन्स" बिना की ही बातें करते हैं, उसमें खुद की थोड़ी भी समझ नहीं है।"

किसकी जीत?
शहर के सब से बड़े फेमस मेज़िक शो की एक ही टिकिट थी और जाने वाले थे तीन...
डैडी, मैं सब से छोटी हूँ। मैंने कभी कोई मेज़िक शो नहीं देखा। प्लीज़, डैडी... प्लीज़, प्लीज़...
तो क्या हमारे पास मेज़िक शो के सीज़नल पास हैं? हमने भी ऐसा शो नहीं देखा। डैडी, मैं शाह अंकल के साथ देखने जाऊँगी।
डैडी, मुझे जाना है।
ओके, ओके, कल शाम को मेज़िक शो देखने कौन जाएगा, उसका डिसीज़न मैं लूँगा। लंच टाइम तक तुम्हें बता दिया जाएगा।
बच्चों, हम काम से बाहर जा रहे हैं। प्लीज़ घर साफ कर देना। पिछले रविवार की तरह आज भी...
मम्मी ने वाक्य अधूरा ही छोड़ दिया।
जैसे ही मम्मी-पापा गए, चेतना ने फोन हाथ में ले लिया और सोफे के एक कोने में बैठ गई।
प्रीति टी.वी. का रिमोट लेकर सोफे के दूसरे कोने में बैठ गई और टी.वी. ऑन करके, चैनल बदलने लगी।

तुम दोनों क्या कर रही हो? मम्मी ने घर साफ करने के लिए कहा है, तुमने सुना नहीं?
लेकिन चेतना और प्रीति तो खुद में ऐसी मस्त हो गई कि गौरी की बात का किसी ने जवाब ही नहीं दिया।
कोई सुनता ही नहीं!
गौरी अकुलाकर स्टडी टेबल की चेयर पर जाकर बैठ गई। तभी उसकी नज़र टेबल पर टूटी हुई फोटो फ्रेम पर पड़ी और पिछले रविवार की पूरी घटना आँखों के सामने आ गई।
पिछले रविवार को काम करने के मामले को लेकर तीनों बहनों के बीच झगड़ा हुआ था और गुस्से में उसने फोटो फ्रेम फेंकी थी।
गर्ल्स, यह ठीक नहीं है। मम्मी-डैडी जोब करते हैं। तो क्या तुम मिलजुलकर इतना काम भी नहीं कर सकते?
एक-दूसरे के साथ एडजस्टमेन्ट लेना सीखोगे तो तुम्हें भविष्य में और लोगों के साथ एडजस्टमेन्ट लेना आएगा। एडजस्टमेन्ट लेने से प्रॉब्लेम सॉल्व करने की शक्ति खिलेगी, कॉमनसेन्स खिलेगी। समझ में आ रहा है तुम्हें?
कितना सुंदर फोटो है। पहले हम कैसे मिलजुलकर रहते थे। झगड़ा करके क्या फायदा हुआ? टाइम वेस्ट हुआ, फोटोफ्रेम टूट गई और सभी को कितना दुःख हुआ।
गौरी के मन में जैसे अनुभव का निचोड़ आ गया हो...
मुझसे जितना हो सकता है उतना साफ कर देती हूँ। थोड़ा ज्यादा काम करूँगी, तो क्या घिस जाऊँगी? और मम्मी को भी कितनी हेल्प होगी!

सफाई करते समय गौरी को एक सफेद कवर मिला। कवर खाली था लेकिन कवर पर लिखा था - "जिसे मिला उसके लिए - लव, डैडी।"
पॉकेट में कवर रखकर गौरी ने काम चालू रखा। दूसरे रूम में से उसे दूसरा कवर मिला। तीसरे रूम में से ऐसा ही तीसरा कवर मिला।
यह क्या?
तभी डोरबेल बजी। प्रीति ने दरवाज़ा खोला। मम्मी के हाथ में पिज़्ज़ा का बॉक्स देखकर उसकी आँखों में चमक आ गई।
लंच लेने के बाद मेज़िक शो में किसे जाने मिलेगा, इस सस्पेन्स के खुलने का इंतज़ार हो रहा था।
क्या आज तुम लोगों में काम करने को लेकर कोई झगड़ा हुआ था?
नहीं डैडी, बिल्कुल नहीं।
ओके तो सफेद कवर किसके पास हैं?
सफेद कवर?

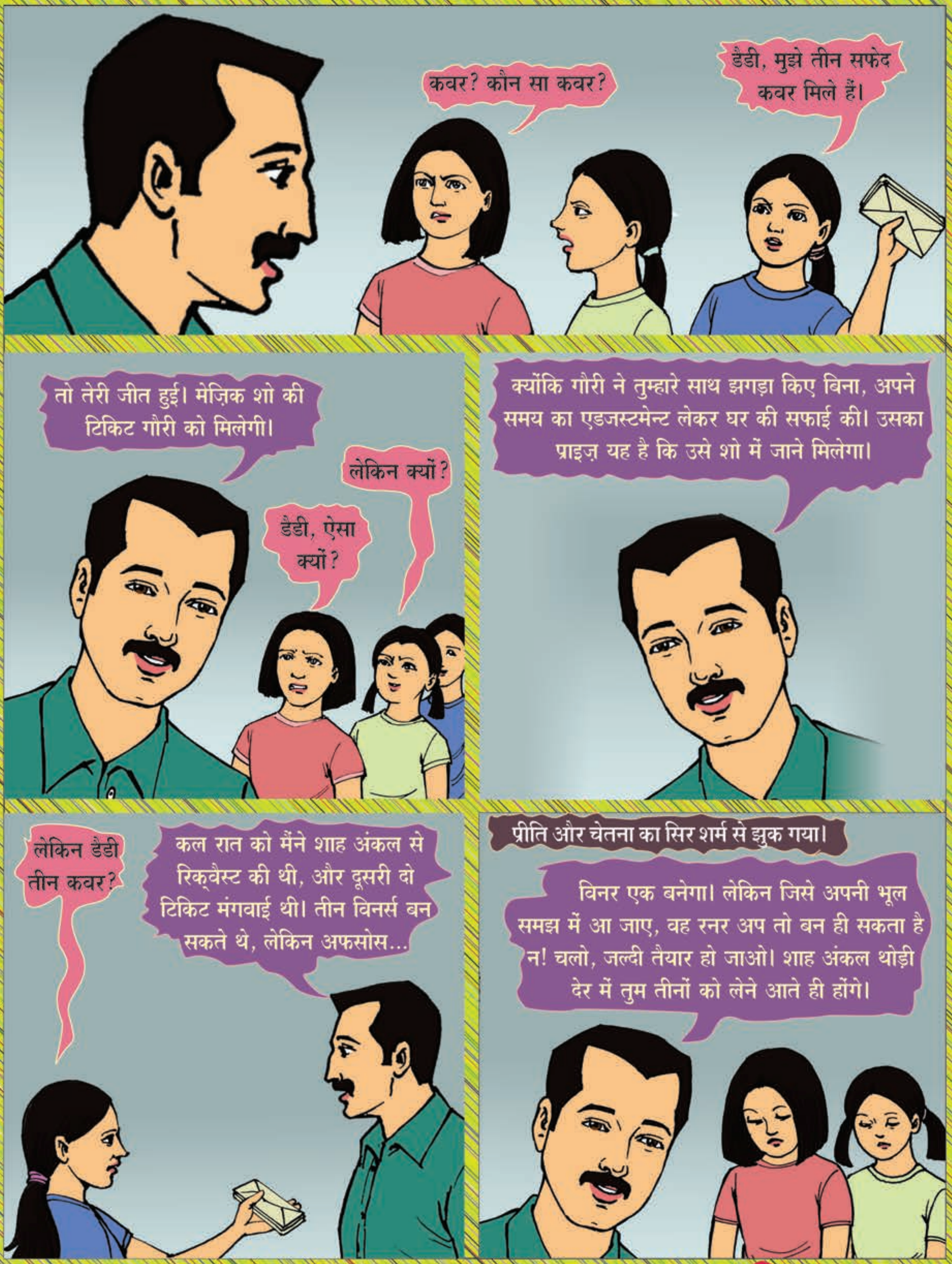
डैडी, मुझे तीन सफेद कवर मिले हैं।
कवर? कौन सा कवर?
तो तेरी जीत हुई। मेज़िक शो की टिकिट गौरी को मिलेगी।
लेकिन क्यों?
डैडी, ऐसा क्यों?
क्योंकि गौरी ने तुम्हारे साथ झगड़ा किए बिना, अपने समय का एडजस्टमेन्ट लेकर घर की सफाई की। उसका प्राइज़ यह है कि उसे शो में जाने मिलेगा।
लेकिन डैडी तीन कवर?
कल रात को मैंने शाह अंकल से रिक्वैस्ट की थी, और दूसरी दो टिकिट मंगवाई थी। तीन विनर्स बन सकते थे, लेकिन अफसोस...
प्रीति और चेतना का सिर शर्म से झुक गया।
विनर एक बनेगा। लेकिन जिसे अपनी भूल समझ में आ जाए, वह रनर अप तो बन ही सकता है न! चलो, जल्दी तैयार हो जाओ। शाह अंकल थोड़ी देर में तुम तीनों को लेने आते ही होंगे।

चलो खेलें...

पझल

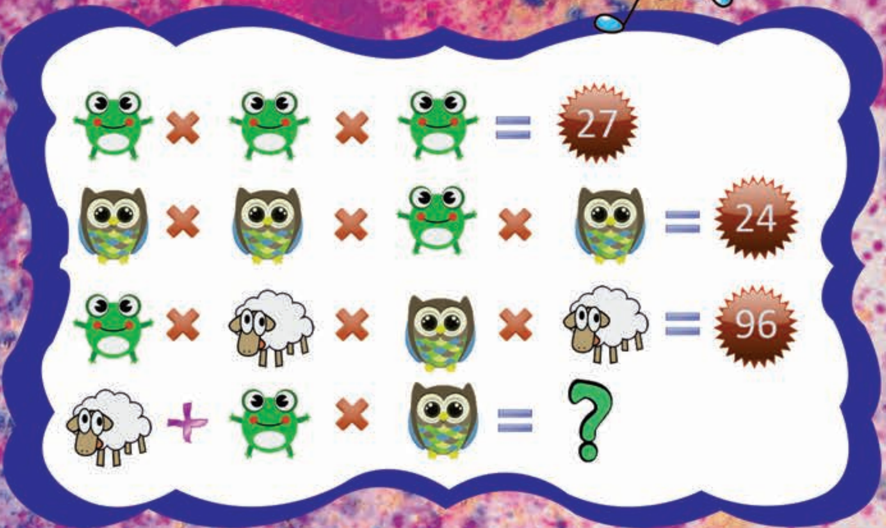

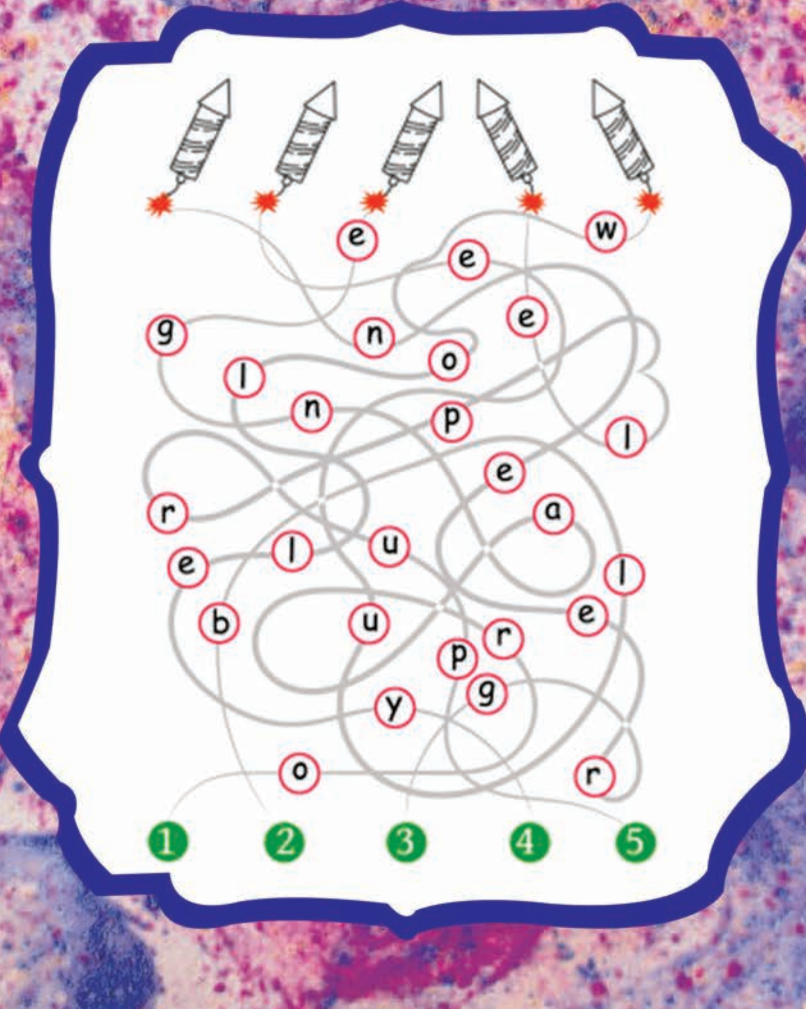

डोरी कौन से रोकेट से जुड़ी हुई हैं, वह ढूँढो। हरएक डोरी में एक रंग छूपा हुआ हैं, उसे ढूँढ निकालो।

रियल लाइफ स्टॉरी

सत्ताईस साल जेल में कैद रहने के बाद फरवरी ११,१९९० के दिन नेल्सन मंडेला मुक्त हुए। चार साल बाद, नेल्सन मंडेला साउथ आफ्रीका के प्रथम ब्लैक प्रेसिडेन्ट बने।

जब मंडेला प्रेसिडेन्ट बने, तब साउथ आफ्रीका में ब्लैक और व्हाइट प्रजा के बीच में ज़बरदस्त तनाव था। दोनों प्रजा में एक-दूसरे के लिए अत्यंत द्वेष था। यह द्वेष, हिंसा अथवा सिविल वॉर में परिवर्तित होने की पूरी-पूरी सँभावना थी। देश को संगठीत करना और देश में एकता लाना, नेल्सन मंडेला के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती थी। जिस व्हाइट प्रजा ने नेल्सन मंडेला को २७ साल जेल में रखा, उसके प्रति ज़रा भी बैर भाव रखे बिना, उन्हें दिल से माफ कर दिया, उनके साथ मिलकर, देश को ऊपर लाने के लिए मंडेला संपूर्ण प्रयत्नशील थे।

एक बार नेल्सन मंडेला स्टेडियम में साउथ आफ्रीका और इंग्लैन्ड के बीच रग्बी मैच देख रहे थे। उस समय उन्होंने देखा कि देश की ब्लैक प्रजा, अपने देश की टीम को समर्थन देने के बजाय प्रतिस्पर्धी टीम, यानी इंग्लैन्ड की टीम, को समर्थन दे रही थी। इसका यह कारण था कि ब्लैक प्रजा, साउथ आफ्रीका के व्हाइट प्लेयर्स का साथ नहीं देना चाहती थी।

यह देखकर मंडेला को देश को संगठीत करने का उपाय सूझा। एक साल बाद साउथ आफ्रीका में रग्बी के वर्ल्ड कप का आयोजन था। मंडेला ने साउथ आफ्रीका की रग्बी टीम के कप्तान (स्प्रिंगबोक) को बुलवाकर उसे समझाया कि, "ऐसा है कि वर्ल्ड कप में स्प्रिंगबोक की जीत, साउथ आफ्रीका की एकता और संगठन का बड़ा निमित्त बन सकती है।" मंडेला के शब्दों से कप्तान बहुत प्रभावित हुआ और उनकी बात से सहमत हुआ।

एक रग्बी मैच, देश को संगठीत कर सकती है, यह बात कई लोग मानने तैयार नहीं थे। लेकिन मंडेला और कैप्टन को दृढ़ विश्वास था कि देश का संगठन रग्बी मैच के निमित्त से सँभव है।

साउथ आफ्रीका की रग्बी टीम देश के छोटे टाउन में जाकर मैच का आयोजन करने लगी। इस निमित्त से टीम के प्लेयर्स स्थानिक ब्लैक प्रजा के साथ मिलने-जुलने लगे। और धीरे-धीरे ब्लैक प्रजा के साथ उनकी फ्रेन्डशीप होने लगी। देखते-देखते देश की ब्लैक प्रजा, अपने देश की रग्बी टीम को सपोर्ट करने लगी।

साउथ आफ्रीका की टीम ने १९९५ में रग्बी वर्ल्ड कप जीतकर एक अनोखी सफलता प्राप्त की। सालों पुराना बैर भाव खत्म हुआ, साउथ आफ्रीका की ब्लैक और व्हाइट प्रजा ने पहली बार एक साथ स्टेडियम में बैठकर अपनी टीम और अपने देश का दिल से समर्थन किया।

और इस तरह, नेल्सन मंडेला की ग़ज़ब की कॉमनसेन्स से, एक रग्बी मैच, देश की एकता का बड़ा निमित्त बन गई।

ऐतिहासिक गौरवगाथा

चंपापुर नगर में बलभद्र नामक एक धनवान सेठ रहते थे। उनके पाँच बेटे थे। सभी बेटे गुणवान तथा बुद्धिमान थे।

उन सेठ के मकान के सामने राजपुरोहित श्रीधर रहते थे। उनका नारायण नाम का बेटा था। वह मोजशौक में बड़ा हुआ और कुछ पढ़ नहीं पाया। समय जाते उसके माता-पिता का देहांत हो गया। पढ़ा-लिखा नहीं होने की वज़ह से उसे उसके पिता का राजपुरोहित पद नहीं मिला। लेकिन उसके पिता का कमाया हुआ धन था इसलिए उसने सोचा कि देश-विदेश में घूमूँगा और मौज करूँगा।

एक दिन घर का सामान सेट करते समय उसे कौने में एक छोटी पेटी मिली। खोलकर देखा तो बहुत आश्चर्य हुआ। उसमें पाँच कीमती रत्न थे। उन रत्नों की कीमत जानने के लिए वह सुनार की दुकान पर गया। सुनार ने हर एक की कीमत एक करोड़ मुद्रा बताई। अब नारायण ने सोचा, "मुझे कमाने की क्या ज़रूरत है?" जब ज़रूरत पड़ेगी तब रत्न बेच दूँगा और मज़े करूँगा।"

विदेश जाने की पूरी तैयारी हो गई, लेकिन उसने सोचा, "इस कीमती रत्नों की पेटी को कहाँ रखूँ? घर में से कोई चुरा ले गया तो?"

बलभद्र सेठ इज़्ज़तदार और "सत्य निष्ठ" थे। इसलिए नारायण ने पेटी सेठ के घर रखी और कहा, "मैं विदेश से वापस आऊँगा, तब यह पेटी ले जाऊँगा।" पेटी सेठ को देकर वह निश्चित होकर विदेश चला गया।

थोड़े दिन बाद दीपावली आई। घर की सफाई करते वक्त सेठ को वह पेटी दिखाई दी, उन्हें खोलकर देखने का मन हुआ। पेटी खोलते ही सेठ आश्चर्यचकित हो गए, "इतने महँगे रत्न!"

> "यह बात मेरे और भगवान के सिवाय कोई नहीं जानता।"

रत्नों को हाथ में लेते ही सेठ की नियत बिगड़ गई। अंदर से आवाज़ आई "पराए धन पर नज़र बिगाड़ना महापाप है।" लेकिन सेठ ने अंदर की आवाज़ को दबा दिया। उनका मन ललचाया, "इनमें से दो रत्न बेच दूँगा तो करोड़पति बन जाऊँगा। नारायण मेरा क्या बिगाड़ लेगा। वैसे भी कहाँ कोई इस बात का गवाह है कि उसने मुझे कोई पेटी दी थी।"

सेठ ने दो रत्न बेचकर दो करोड़ मुद्राएँ ले लीं। उस धन से उन्होंने पाँच मंजिला हवेली बनवाई।

पाँच साल बाद नारायण विदेश से वापस लौटा। उसका सारा धन खर्च हो गया था। जब वह सेठ बलभद्र से अपनी पेटी लेने गया तब सेठ ने उसे पहचानने से इनकार कर दिया।

नारायण ने अपनी पहचान बताई, "अरे सेठ, मैं नारायण हूँ। मैंने आपके यहाँ जो रत्नों की पेटी रखी थी उसे वापस लेने आया हूँ।"

सेठ ने क्रोधित होकर कहा, "कौन से रत्न? कैसी पेटी?" सेठ ने अपने सेवकों को बुलवाकर, नारायण को धक्का मारकर, घर से बाहर निकलवा दिया।

नारायण दुःख और भूख से पागल हो गया और एक दिन एक मकान की छत से गिरकर मर गया।

थोड़े दिन बाद, सेठ बलभद्र के सब से बड़े बेटे श्रीकांत की शादी हुई। नई दुल्हन को लेकर श्रीकांत हवेली आया।

भवन की पाँचवीं मंजिल पर चढ़ते हुए वह चिल्लाया, "ओरे, मर गया। बचाओ, साँप ने काट लिया।" शरीर में ज़हर फैलते ही उसके प्राण निकल गए। सेठ बलभद्र के कलेजे के टुकड़े हो गए।

इस बात को बहुत समय बीत गया। सेठ बलभद्र की पीड़ा कुछ कम हुई, इसलिए उन्होंने दूसरे बेटे शशिकांत की शादी की। उसके साथ भी वही हुआ। उसे भी साँप ने डस लिया और उसके प्राण चले गए। सेठ बलभद्र के दुःख का पार नहीं था।

सालों बाद हिम्मत इकट्ठी करके बलभद्र ने अपने तीसरे और चौथे बेटे की शादी करवाई। लेकिन उनका भी वही हाल हुआ।

कई सालों के बाद उसी नगर के एक सेठ अपनी बेटी की शादी, सेठ बलभद्र के पाँचवे और अंतिम बेटे के साथ करवाने की बात लेकर आए।

सेठ बलभद्र ने कहा, "आपको पता है न कि मेरे चार बेटे शादी के बाद तुरंत ही मृत्यु को प्राप्त हो गए हैं? तो क्यों आप अपनी बेटी की शादी मेरे बेटे के साथ करवाकर जवानी में ही उसे विधवा बनाना चाहते हैं?"

बेटी के पिता ने सेठ बलभद्र को पूरा विश्वास दिलाया, "मेरी बेटी शुभमति ने एक महान पुरुष के पास से धार्मिक अभ्यास किया है। तो वह अपनी समझ के प्रताप से आपके घर की रक्षा करेगी।"

बेटी के पिता ने बहुत समझाया इसलिए अंत में भारी हृदय से सेठ बलभद्र ने उनकी बात स्वीकार कर ली। शादी के बाद हरिकांत शुभमति को घर लाया। सभी की साँसे रुक गई।

शुभमति ने हवेली के द्वार पर आते ही अपनी सासु माँ से कहा, "माँ! सेठ जी को बुलवाइए। मुझे उनसे खास बात करनी है।"

सेठ बलभद्र आए। बहू ने एक कौने में ले जाकर सेठ से कहा, "उन ब्राह्मण के पाँच रत्न ले आइए।"

सेठ चौंक गए, "कौन से रत्न, बहू?"

शुभमति ने कहा, "पिता जी, यह अवसर वादविवाद का नहीं है।"

सेठ ने कहा, "बहू, तुझे कैसे पता चला? यह बात मेरे और भगवान के सिवाय कोई नहीं जानता।"

बहु ने जवाब दिया, "पिता जी, समय मत बिगाड़िए। जल्दी से रत्न की पेटी ले आइए।"

सेठ दौड़कर रत्न की पेटी ले आए और कहा, "पाँच रत्नों में से दो रत्न बेच दिए हैं। तीन बचे हैं, वे यह हैं।"

बहु छुपाकर रत्न की पेटी ले गई। पाँचवीं मंज़िल पर उसने रत्न की पेटी खोली और बोली, "हे नागदेवता, मेरे ससुर ने आपके साथ जो विश्वासघात किया है उस अपराध को क्षमा कर दीजिए और बचे हुए तीन रत्न से संतोष मानिए।"

चमत्कार हुआ और नागदेवता बाहर आए। रत्न की पेटी में से एक रत्न मुँह में लेकर वापस चले गए।

चारों तरफ बहू की वाहवाह हुई। लोगों ने सती शुभमति का जय जयकार किया।

सेठ बलभद्र ने बहू से पूछा, "यह सब रहस्य समझाओ।"

शुभमति ने जवाब दिया, "पिता जी, आपने जिस ब्राह्मण के साथ विश्वासघात किया था और उसके पाँच रत्न छीन लिए थे। वह ब्राह्मण मरकर नाग बन गया और विश्वासघात का बदला लेने के लिए आपके घर में छुप गया। एक-एक करके आपके चार बेटों के प्राण लिए। लेकिन आज मैंने नागदेवता की क्षमा माँगी और रत्नों की पेटी उनके सामने रख दी। चार रत्नों का बदला उन्होंने ले लिया था। पाँचवे का बदला बाकी था इसलिए वे एक रत्न अपने मुँह में लेकर चले गए। उनका बैर पूरा हुआ। अब वे कोई उपद्रव नहीं करेंगे।"

सेठ को आश्चर्य हुआ, "लेकिन बहूँ, तुम्हें इसका पता कैसे चला?"

बहू ने बताया कि जिन महान सत्पुरुष के पास उसने धार्मिक अभ्यास किया था, उन्होंने उसे यह बात बताई थी। और शुभमति ने अपनी समझ से इस गुनाह से पार निकलने का उपाय किया था।

सेठ बलभद्र को अपना किया हुआ अपराध बहुत चुभने लगा और उन्होंने दिल से अपनी भूल का पश्चाताप किया।

इस तरह छल से पराई चीज़ लेने का भयंकर परिणाम सेठ बलभद्र को भुगतना पड़ा। और दिल से पश्चाताप करके भूल में से छूट गए।

दादा जी के जीवन की एक बहुत अच्छी बात है। एक बार दादा के बड़े भाई ने, बड़ौदा से भादरण, दादा के लिए संदेश भेजा, "इतने पैसे लेकर तुम जल्दी बड़ौदा आ जाओ। मुझे कल सुबह चाहिए।"

जब दादा को यह समाचार मिले तब रात हो गई थी। किसी भी तरह, रात को ही पैसे लेकर बड़ौदा जाना पड़े ऐसा था। पैसे ज्यादा थे, इसलिए दादा अपने नौकर को साथ लेकर निकले। देर हो जाने की वज़ह से वे ट्रेन चूक गए। अतः उन्होंने तय किया कि रेल्वे की पटरी के साथ-साथ चलते जाएँगे और आगे से गाड़ी पकड़ लेंगे।

दादा ने होशियारी से थोड़े ही पैसे अपनी जेब में रखे और ज्यादा पैसे नौकर की जेब में रखे। दादा को पता था कि उस विस्तार में लुटेरे यात्रियों को लूट लेते हैं। लेकिन बड़े भाई को पैसे पहुँचाना ज़रूरी था। इसलिए वे हिम्मत करके चलने लगे।

बहुत अंधेरा था। पटरी पर चल रहे थे, कि थोड़ी दूर वहाँ कुछ व्यक्तियों की बीड़ी की रोशनी दिखाई दी। दादा और उनका नौकर समझ गए। दूर लुटेरे बैठे हैं। नौकर डरने लगा। दादा को लगा, "पैसे जाएँ तो कोई हर्ज़ नहीं, लेकिन मारेंगे तो पैर तोड़ डालेंगे।"

दादा की कॉमनसेन्स तो टॉप लेवल की थी। उन्होंने इशारे से नौकर को पीछे आने के लिए कहा। और वे सीधे लुटेरों के पास गए। दादा ने चोरों से पूछा, "साहब, आपके पास माचिस है? मेरे पास बीड़ी है, लेकिन माचिस के पैसे नहीं है।"

वह चोर एकदम चिढ़ गया, "इस वक्त हमारा दिमाग खाने क्यों आया है?" अकुलाकर माचिस देकर, दादा और उनके नौकर को वहाँ से रवाना कर दिया।

चोरों को लगा कि उनके पास माचिस के पैसे भी नहीं है तो जेब में और कुछ क्या होगा!

और इस तरह चोरों के साथ किसी भी तरह के टकराव के बिना, कॉमनसेन्स का उपयोग करके, दादा ने प्रॉब्लेम सॉल्व किया।

मीठी यादें

१९८२ की बात है। एक महात्मा के घर दादा का सत्संग रखा गया था। सत्संग में, अन्य संप्रदाय के बड़ी उम्र के एक भाई आए थे। जैसे ही दादा ने रूम में प्रवेश किया, सभी महात्मा, "दादा भगवान के असीम जय जयकार हो" गाने लगे।

दूसरे संप्रदाय के भाई को यह ठीक नहीं लगा। कीर्तन-भक्ति पूरी हुई इसलिए वह गुस्सा हो गए और दादा से कहने लगे, "आप अपने आप को भगवान क्यों कहलवाते हो?"

तुरंत ही दादा, उस भाई के संप्रदाय के भगवान के "असीम जय जयकार हो" गाने लगे और अन्य महात्मा भी दादा के साथ गाने लगे।

फिर तो वह भाई बहुत खुश हो गए और दादा के पैरों में गिर पड़े।

देखा मित्रों, ज्ञानी किसी के साथ टकराव में नहीं आते और अपनी खास समझ और कॉमनसेन्स से सामने वाले के मन का समाधान भी करवा देते हैं।

सीमंधर सिटी में हिन्दी शिविर दौरान हुआ B MHT और L MHT का कैम्प...

पज़ल के जवाब

1

10

2

१ ORANGE
२ BLUE
३ GREEN
४ YELLOW
५ PURPLE

Akram Express
July 2017
Year : 5, Issue : 4
Conti. Issue No.: 52

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

सीमंधर सिटी में हिन्दी शिविर दौरान एक संध्या में आनंद मेले के आयोजन में हुआ कल्चरल शो।

साइन लेंग्वेज द्वारा दिखाई गई "नौ कलम"...

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Mr. Dimplebhai Mehta on behaif of Mahavideh Foundation
Printed at **Amba offset** :- Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad - 14 and published